भारतीय कलाकारों का कोलाज कला संयोजन में योगदान

प्रिया दत्त उपाध्याय
शोधार्थी (ड्राइंग एण्ड पेंटिंग विभाग)
दयालबाग एजुकेशनल इन्स्टीट्यूट
दयालबाग, आगरा
ईमेलः *peehuupadhyay1994@gmail.com*

डॉ० नमिता त्यागी
असिस्टेंट प्रोफेसर (ड्राइंग एण्ड पेंटिंग विभाग)
दयालबाग एजुकेशनल इन्स्टीट्यूट,
दयालबाग, आगरा
ईमेलः *natyagi09@gmail.com*

Reference to this paper should be made as follows:

प्रिया दत्त उपाध्याय
डॉ. नमिता त्यागी

भारतीय कलाकारों का कोलाज कला संयोजन में योगदान

Artistic Narration
July-Dec. 2024,
Vol. XV, No. 2
Article No. 32
pp. 190-199

Online available at:
https://anubooks.com/journal-volume/artistic-narration-dec-2024-vol-xv-no2

सारांश

भारतीय कलाकारों ने कोलाज कला के क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान दिया है, जो न केवल उनकी रचनात्मकता को दर्शाता है, बल्कि भारतीय समाज की विविधता और जटिलताओं को भी उजागर करता है। कोलाज एक ऐसा कला रूप है जिसमें विभिन्न सामग्रियों जैसे कि कागज, कपड़ा, तस्वीरें, और अन्य वस्तुओं का संयोजन किया जाता है। इस प्रक्रिया में कलाकार अपनी कल्पना और विचारों को एकत्रित करके एक नया और अनूठा दृश्य प्रस्तुत करते हैं।

भारतीय कलाकारों के कार्यों में सांस्कृतिक विविधता का गहरा प्रभाव देखने को मिलता है। वे अपने कोलाज में विभिन्न परंपराओं, रीति–रिवाजों और सामाजिक मुद्दों को शामिल करते हैं, जिससे दर्शकों को एक नई दृष्टि मिलती है। उदाहरण के लिए कुछ कलाकार अपने कोलाज के माध्यम से जाति, लिंग और आर्थिक असमानताओं जैसे सामाजिक मुद्दों को उजागर करते हैं, जबकि अन्य अपने कार्यों में भारतीय लोककला और शिल्पकला के तत्वों को शामिल करते हैं, जो उनकी सांस्कृतिक जड़ों को दर्शाते हैं। इस कला रूप ने भारतीय परंपराओं और आधुनिकता के बीच एक पुल का कार्य किया है। कोलाज कला ने कलाकारों को अपनी भावनाओं और विचारों को अभिव्यक्त करने का एक नया माध्यम प्रदान किया है, जिससे वे अपने अनुभवों को साझा कर सकते हैं। यह कला रूप न केवल व्यक्तिगत भावनाओं को व्यक्त करने का एक साधन है, बल्कि यह सामूहिक पहचान और सामाजिक संवाद को भी प्रोत्साहित करता है।

नंदलाल बोस, विनोद बिहारी मुखर्जी, सतीश गुजराल, के.जी. सुब्रमण्यन, अमृतलाल वेगड़, प्रदोश दास गुप्ता, एम.एफ. हुसैन, बलदेव राज

पानेसर, रमेश पटेरिया, सोमनाथ होर, उमा शर्मा जैसे भारतीय कलाकारों ने कोलाज कला के परिदृश्य में एक नई दिशा दी है, जहां पारंपरिक तकनीकों और आधुनिक दृष्टिकोण का संगम होता है। यह कला रूप युवा कलाकारों के लिए एक प्रेरणा स्रोत बन गया है, जो अपने विचारों को स्वतंत्रता से व्यक्त करने के लिए नए प्रयोग कर रहे हैं। इस प्रकार, भारतीय कलाकारों का कोलाज कला में योगदान न केवल उनकी व्यक्तिगत पहचान को दर्शाता है, बल्कि यह भारतीय समाज की समृद्धि और विविधता को भी उजागर करता है।

मुख्य बिंदु

चित्रकला, कोलाज, लोककला, सांस्कृतिक, धार्मिक।

कोलाज कला अन्य कलाओं की तरह एक कला कर्म हैं। जिसमें सृजन की अनगिनत संभावनाएँ है। कोलाज का प्रयोग मुख्य रूप से दृश्य कलाओं में अधिक होता है। कोलाज शब्द फ्रेंच भाषा से आया है इसका अर्थ होता है चिपकाना। कला जगत में कोलाज ऐसा पारिवारिक शब्द हैं जिसमें विविध चीजों के संयोजन से नवीन कृति का निर्माण होता है जैसे मैगजीन के रंगीन पेपर, टेक्स्ट पेपर, रिबन, रंगीन हैंडमेड कागज, फोटोग्राफ्स अथवा अन्य वस्तुएँ। कोलाज कला के लिये भी अकादमिक समझ और प्रशिक्षण की आवश्यकता होती है इस हेतु रंगों, आकारों, संयोजन सिद्धांत और परिप्रेक्ष्य की पूर्ण जानकारी का होना आवश्यक है।

गिटार एण्ड वाइन ग्लास पाब्लो पिकासो

कोलाज कला के प्रारंभिक उदाहरण 12वीं सदी में चीन और जापान में देखने को मिलते हैं इसमें कागज के टुकड़ों को एक साथ चिपकाकर कोलाज चित्रों का निर्माण किया गया, परंतु कोलाज कला के सर्वश्रेष्ठ उदाहरण 20वीं सदी में धनवादी शैली के कलाकार जार्ज ब्राक और पाब्लो पिकासो के कोलाज चित्रों में देखने को मिलते हैं। धनवादी शैली के द्वितीय चरण संश्लेषणात्मक धनवाद में 1912 से 1914 के मध्य पिकासो और ब्राक की कोलाज कृतियों के आधार पर कलाकार वर्ग और कला समीक्षक वर्ग द्वारा कोलाज कला की मुख्य धारा का पर्दापण हुआ। सन 1908 से पिकासो व ब्राक ने कुछ समय तक साथ में कार्य किया जिसका प्रभाव उनके चित्रों में समानताओं के साथ देखा जा सकता है। अत्यधिक समानताएँ होने के कारण उनके चित्रों को पृथक कर पाना कठिन था लेकिन गहन अध्ययन से ज्ञात होता है कि पिकासो के चित्रों में गतित्व व कल्पनारंजना पर बल दिया गया है जबकि ब्राक के चित्रों में नियन्त्रण व स्थायी भाव के साथ रंग संगति व आकारों के आंलकारित्व का प्रभाव दिखाई पड़ता है जिसमें इनके चित्रों में विविधताओं को स्पष्ट रूप से देख सकते हैं। इस शैली में दो कलाकारों के मध्य

विमेन विद ए गिटार, जॉर्ज ब्राक

आदान–प्रदान का ब्राक ने इस प्रकार वर्णन किया है कि हमारे अलावा कोई भी कभी भी समझ नहीं पाएगा। जॉर्ज ब्राक जब एविग्नन में वॉलपेपर स्टोर के पास से निकलते हुए लकड़ी के दाने और वॉलपेपर को तुरंत खरीद लेते और स्टूडियो में जाकर बड़े चारकोल चित्रों की सतह पर आयताकार टुकड़े चिपकाना शुरू कर देते थे। कागज को इस प्रकार से परस्पर जोड़कर किया करते थे जो पिकासो और ब्राक दोनों की कला को पूरी तरह से एक नया आयाम दिया। पिकासों के शुरुआती कोलाज चित्रों में गिटार और शीट म्यूजिक में उन्होंने छायांकन और संरचना बनाते हुए कागज को परत दर परत चिपकाया। उनके चित्रों में नकली लकड़ी के दाने वाले कागज, लोकप्रिय गीतों के अंश, वाद्ययंत्रों और अन्य वस्तुओं के टुकड़ों का प्रयोग किया गया है। पिकासो और ब्राक के बाद स्पेन के कलाकार जुआन ग्रिस ने भी द्विआयामी और त्रिआयामी कला को विकसित करने के लिए कोलाज का प्रयोग किया। उनके पेपर कोलाज उस समय के सबसे अधिक चित्रात्मक और जटिल रूप से वर्णित किए गए हैं।

भविष्यवादी कलाकारों ने भी कोलाज शैली में कार्य किया। उम्बर्टो बोच्चियानी की कला में सतह को समृद्ध करने का तरीका स्पष्ट हुआ वहीं दूसरी ओर कैरा ने अपने चित्रों में मुक्त शब्द चित्रों में पहले से तैयार तत्वों को स्थान दिया। जियोकोमाबल्ला ने भी त्रियायामी निर्माणों के दृश्यमान मोबाइल संस्करणों को तैयार करने के लिए कोलाज का प्रयोग किया। धीरे–धीरे पिकासो के ब्राक के कोलाज की चर्चा रूस तक पहुँच गई और वहाँ भी कला में क्रान्तिकारी बदलाव किए गए। शब्द अन्वेषण का प्राथमिक क्षेत्र था और कलाकारों के कोलाज कार्य में एक महत्वपूर्ण तत्व था। 1914 में मालेविच की पोस्टर कॉलम में महिला छवि के निर्देशांक को बदलने के लिए कोलाज तत्वों का उपयोग किया।

प्रथम विश्व युद्ध की राजनीति के कारण नई शैली का जन्म हुआ जिसे दादावाद का नाम दिया गया। दादावादियों ने धनवादी कलाकारो के साथ समानताएँ साझा कर शैलीगत रूप से चिपकाए गए कागजों से संयोजन कर कोलाज कला में बदलाव किए। सन् 1914 में हंस आर्प जर्मनी आए और उन्होंने वहाँ पिकासो और ब्राक के पेपर कोलाज देखे उसके बाद 1915 में आर्प ज्यूरिख आए और टान्नर गैलरी में कोलाज कार्यों के प्रदर्शन के दौरान उन्होंने कैटलॉग में समझाया कि कार्य रेखाओं, रूपों और रंगों की संरचनाएं हैं जो मानव क्षेत्र से परे अनंत और शाश्वत को प्राप्त करने का प्रयास करती है। वे मानव अंहकार का खंडन है। क्लेबेबिल्डर उस अवधि के हन्ना होंच के कोलाज शैली के सबसे प्रसिद्ध कार्यों में से एक था। एक बच्चे के रूप में होंच पहले से ही कागज के कोलाज बना रहे थे। पेपर कोलाज ने धनवादी कलाकारों के लिए निर्माण और डिजाइन के रास्ते खोल दिए थे और दादावादियों को रिलीफ असेंबल, ओवर पेंटिंग और फोटो कोलाज की तकनीक ने अति यथार्थवादी कलाकारों को प्रभावित किया। उनके लिए कोलाज का मतलब केवल गोंद और कागज नहीं था। सन् 1920 के दशक के अंत में मैक्स अन्सर्ट ने अपने कोलाज उपन्यासों में दृश्य और मौखिक का सम्मिश्रण किया। लुई आरागॉन ने गोएन्स गैलरी में एक प्रदर्शनी का ऑयोजन किया जो केवल कोलाज को समर्पित थी। उस प्रदर्शनी में अर्प, ब्राक, डाली, डुचौम्प, अन्सर्ट, ग्रिस, मैग्रीट, मान रे, मिरो, पिकाबिया, पिकासो और टैंगुई की कृतियाँ शामिल थीं। पिकबिया और मान रे को भी इस प्रदर्शनी में शामिल किया गया। 20वीं सदी के मध्य में पेपर डिकूपी तकनीक (आकृतियों और आकारों को काटना) के साथ प्रयोग कर रहे थे प्रदर्शनी में शामिल अमेत में पेपर के साथ प्रयोग कर रहे थे वहीं दूसरी ओर मैक्स अन्सर्ट ने मैग्रीट के बारे में देखा कि उनकी पेंटिंग हाथ से चित्रित कोलाज थी। जैसे दर्शक पेटिंग देखने और पढ़ने के बीच में फंस जाता है। यह कोलाज का प्रभाव है जो इन दोनों के मध्य अंतर को स्पष्ट करता है।

अति यथार्थवादी कलाकार जोसेफ कॉर्नेल ने कला की कोई औपचारिक शिक्षा नहीं ली। लेकिन लकड़ी के बक्सों में रखे उनके संयोजन कार्यों ने उन्हें कोलाज और संयोजन में काम करने वाले २० वीं सदी के सबसे महत्वपूर्ण कलाकारों में से एक बना दिया। गुगेनहाइम ने रॉबर्ट मदर बेल, जैक्सन पोलाक और विलियम बाजियोटेस को कोलाज की प्रदर्शनी नामक एक प्रदर्शनी के लिए आमंत्रित किया गया जिसमें प्रदर्शनी के लिए कोलाज कार्य प्रस्तुत करने थे। रॉबर्ट मदरबेल के लिए अपने चित्रों में रोजमर्रा की दुनिया के टुकड़ों को शामिल करने का तरीका था। उन्होंने कोलाज को प्लेसिंग और एलिप्सिस दोनों के रूप में संदर्शित किया। गुगेनहाइम ने पोलाक के बारे में कहा कि उनके पास कोलाज के लिए एक विशेष भावना नहीं थी लेकिन जिस हिंसा के साथ उन्होंने कला सामग्री पर हमला किया, उससे वह हैरान थे। वहीं दूसरी और पोलाक की पत्नी ली क्रासनर ने कोलाज के पूरे चरण का अनुभव किया और अपने कोलाज के काम को काटने, फाड़ने और चिपकाने में सुकून पाया। उन्होंने अपनी पुरानी त्याग दी गई पेंटिंग्स और पोलाक की पेंटिंग्स के टुकड़ों का भी इस्तेमाल किया। उनके कोलाज समय और बदलाव से जुड़े है।

सन् 1950 के दशक में इंडिपेंडेंट ग्रुप के साथ यू.के. में पॉप आर्ट का उदय हुआ। इस ग्रुप के सदस्य एडुआर्डो पाओलोजी और रिचर्ड हैमिल्टन दोनों ने कोलाज पद्धति का भरपूर उपयोग किया। पाओलोजी ने कोलाज–प्रकार की स्क्रैप बुक बनाई जबकि हैमिल्टन ने सभी प्रकार की सामग्रियों को एक साथ रखा। कोलाज पॉप आर्ट की त्वरित तीक्ष्ण ढंग से समय को दर्शाने वाली कला के साथ पूरी तरह से सटीक बैठता है।

वहीं दूसरी और भारत में उन्नीसवीं शताब्दी के मध्य तक आते–आते चलीं आ रही परंपरागत कलाओं जैसे राजस्थानी पहाड़ी, मुगल शैलियों का ह्रास होने लगा इसका कारण अनेक विदेशी चित्रकारों का विभिन्न शासकों के दरबारों में आने से हुआ। उन्नीसवीं शती में भारतवर्ष के कई स्थानों पर कुछ स्थानीय शैलियाँ भी चल रही थीं, जैसे–बंगाल की पटुआ कला, कालीघाट के पटचित्र, उड़ीसा के पटचित्र, नाथ द्वारा के पटचित्र, तंजौर शैली के चित्र आदि। इन स्थानीय शैलियों के साथ भारत में कम्पनी शैली का आगमन हुआ जिसके साथ विदेशी चित्रकारों ने भारत में यूरोपीय चित्रण कार्य किया जिसका प्रभाव भारतीय कला में दिखाई देने लगा। पश्चिमी कला की शिक्षा देने के लिए भारत के बड़े नगरों में कला विद्यालय स्थापित किए गए जहाँ यूरोपीय शिक्षकों के निर्देशन में भारतीय विद्यार्थियों को कला एवं शिल्प सिखाया जाने किंतु इन्हीं कला विद्यालयों में आगे चलकर भारतीय कला के प्रशंसक शिक्षक तथा विद्यार्थी आये जिनके कारण कला के पाठ्यक्रम में परिवर्तन किये गए और भारतीय कला को अर्थात भारतीय विषयों पर आधारित चित्रण कार्य आरंभ हो गया। सन् 1844 ई० में ई. वी. हैवेल मद्रास कला विद्यालय के प्राचार्य बने। उनके योगदान से संसार भर का ध्यान भारत की चित्रकला की ओर आकर्षित हुआ। उन्होंने कहा यूरोपीय कला तो केवल सांसारिक वस्तुओं का ज्ञान कराती है पर भारतीय कला सर्वव्यापी, अमर तथा अपार है। हैवेल के सम्पर्क में अवनीन्द्रनाथ ठाकुर आये जिन्होंने आगे चलकर पुनरुत्थान का सूत्रपात किया। अवनी बाबू की कला पर पश्चिमी, ईरानी, चीनी, जापानी मुगल, राजपूत तथा अजन्ता का प्रभाव था। इन सबके समन्वय से उन्होंने नयी कला का आरम्भ किया। 1905 ई० में अवनी बाबू कलकत्ता स्कूल के प्रधानाचार्य नियुक्त हुए। वहाँ उन्होंने अनेक शिष्य तैयार किए जो देश के विभिन्न भागों में फैले और कला का प्रचार करने लगे। नन्दलाल बोस, असित कुमार हल्दार, क्षितीन्द्रनाथ मजूमदार, समरेन्द्रनाथ गुप्त, देवी प्रसाद रॉय चौधरी तथा उकील बंधु प्रमुख थे। जिन्होंने देश के अनेक भागों में टैगोर शैली का प्रचार–प्रसार किया। पेरिस से लौटी अमृता शेरगिल, गगनेन्द्रनाथ ठाकुर,

यामिनी रॉय, विनोद बिहारी मुखर्जी जैसे कलाकारों के नूतन प्रयोगों ने भारतीय चित्र परम्परा को स्वतंत्र अंकन की ओर प्रेरित किया। बंगाल शैली के चित्र पारदर्शी, वॉश और ओपक सभी तकनीकों से बनाये गये।

बंगाल शैली में अवनी बाबू और उनके प्रमुख शिष्य नंदलाल बोस ने जलरंग, वॉश, टेंपरा विधि में चित्रांकन कार्य किया वहीं दूसरी ओर नंदलाल बोस के प्रिय शिष्य रहे विनोद बिहारी मुखर्जी ने मास्टर मोशाय से कला की शिक्षा प्राप्त की और नन्दबाबू के टच वर्क, भित्ति चित्रण से अधिक प्रभावित हुए। भारतीय कला परम्परा में विनोद बिहारी मुखर्जी का योगदान बहुत महत्वपूर्ण है। इन्होंने बंगाल शैली की भावुकता से बाहर निकलकर साहित्यिक विषयों का प्रभुत्व हटाकर कला को विशुद्ध चित्रात्मक तत्वों–रेखा रंग, रूप, टेक्सचर आदि महत्व दिया। अपने प्रयोगवादी स्वभाव के कारण इन्होंने भित्तिचित्र, कोलाज, केलीग्राफी, वुडकट, एचिंग सभी प्रकार के कार्य किए गये। उपरोक्त सभी बातों से प्रतीत होता है कि वे आधुनिक काल से परिवर्तनों से लगातार प्रभावित होते रहे और उसी अनुरूप कलात्मक कार्य किए।

नंदलाल बोस – नन्दलाल बसु का जन्म 3 दिसंबर 1882 ई० को बिहार राज्य के मुंगेर जिले के हवेली खडकपुर कस्बे के मध्यमवर्गीय बंगाली परिवार में हुआ था। उनके पिता पूर्णचन्द्र बोस एक वास्तुविद् तथा दरभंगा के एस्टेट मैनेजर थे। उनकी माँ क्षेममणि देवी, करुणहृदय एवं धार्मिक महिला थीं। वे घर में ही छोटे–छोटे खिलौने तरह–तरह के हस्तशिल्प व गुड्डे–गुड़िया बनाया करती थीं। संभवतः यह गुण उन्होंने अपने माता–पिता से ग्रहण किये जो कला में पारंगत थे। यही कारण रहा कि नन्दलाल बसु की बचपन से ही कला के प्रति रुचि थी। सन् 1905 ई० में कलकत्ता स्कूल ऑफ आर्ट में प्रवेश लिया और अवनीन्द्रनाथ टैगोर के सानिध्य में रहकर कला अभ्यास किया। शांति निकेतन में वे लोगों के बीच मास्टर मोशाय के नाम से प्रसिद्ध थे। नंदलाल का रेखांकन उत्कृष्ट कोटि का है। उनकी रेखाओं में बड़ी शक्ति है वे कहीं लचीली हैं, रूढ़ कहीं भी नहीं। नंदलाल बोस ने भारतीय कला और संस्कृति का गहन अध्ययन किया था और उससे प्राप्त प्रेरणा से अपनी एक निजि शैली विकसित की जिसे बोस या नव बंगाल शैली कहा जाता है। इनकी कला शैली रेखा प्रधान है जिस पर अजंता का स्पष्ट प्रभाव दिखाई पड़ता है। शुरुआत में उन्होंने अपने गुरु अवनीन्द्रनाथ द्वारा आविष्कृत 'वॉश शैली में कृतियाँ बनाई जिसमें सती व शिव का विषपान अत्यधिक प्रसिद्ध है। बाद में प्रमुखतः टेम्परा विधि का प्रयोग किया। उन्होंने इसके अलावा अन्य माध्यमों में पेंसिल, स्याही, रंगीन पैन, लिनोकट, ड्रायपॉइंट माउंटबोर्ड पर टेम्परा, कोलाज, तैल व जल रंग आदि का दक्षता के साथ प्रयोग किया इसलिए उन्हें प्रयोगधर्मी कलाकार कहा गया। नंदबाबू कहते भी थे– आधुनिक कला का अध्ययन अवश्य किया जाना चाहिए पर अपनी परंपरा भी नहीं भूलनी चाहिये। जो निजी है जो हमारी परंपरा है जिसे हमने स्वतः अनजाने ही अपनाया है, जो रक्त स्रोत है, उसे हटाकर फेंक तो नहीं सकते परंतु हमें अपनी धुरी को आधुनिक युग धर्म से भी युगधर्म से भी मिलाना है, क्योंकि युगधर्म से भी हम मुंह नहीं मोड़ सकते अतः दोनों का समन्वय आवश्यक है।"

नंदलाल बोस ने लगभग 1000 चित्रों की रचना की जिनमें अधिकांश चित्रों का विषय पौराणिक तथा धार्मिक कथानकों पर आधारित है। विशेष तौर पर उन्होंने शिव को चुना। यह कारण भी था कि उनके कलागुरु अवनी बाबू उन्हें शिव सिद्ध कहा करते थे। इसके अलावा उन्होनें बुद्ध जीवन ऐतिहासिक कथाओं राजनीतिक, भारतीय जनजीवन, व्यक्तिचित्र, ऋतुएँ पर्व तथा उत्सव, जीव–जंतु तथा वृक्ष–वनस्पति, वन्य व जलीय दृश्य का विषय बनाया। 23 चित्र नई दिल्ली के राष्ट्रीय आधुनिक कला

मुर्गी चुराना नंदलाल बोस

संग्रहालय में सुरक्षित है। इनके प्रमुख चित्रों में चित्रकला के विभिन्न माध्यमों के साथ–साथ नंदलाल ने कोलाज तकनीक में भी चित्र बनाए है जिससे कला के विभिन्न माध्यमों के प्रति उनकी रुचि को हम देख सकते हैं। उनके कुछ प्रमुख कोलाज चित्र–फर कोट, पक्षी, तंबू के अंदर महिला, गेलो गेलो गेलो(मुर्गी चुराना), तितली के साथ पक्षी, स्नोमैन, एवरेस्ट अभिजन आदि। उन्होंने अपने चित्रों में उस तरीके का उल्लेख किया है जिसमें कागज को बिना किसी पूर्वचिन्तन के फाड़ दिया जाता है जिसके बाद छोटी–मोटी कॉट– छाँट की जाती है एक आकार और बनाने के लिए कुछ पंक्तियाँ जोड़ी जाती हैं। यहाँ स्वचालित सहज का एक तत्व है, जो कलाकार के अंतर्ज्ञान को बढ़ावा देता है।

विनोद बिहारी मुखर्जी– बचपन से ही अंधेपन का शिकार हुए विनोद बिहारी मुखर्जी को आधुनिक कला का अग्रदूत कहा जाता है। आधुनिक भारत में वे सबसे आरंभिक कलाकारों में से एक थे जिन्होंने भित्ति चित्रण को एक विद्या के रूप में आत्मसात किया। उनके सभी भित्तिचित्र (म्यूरल) वास्तु बारीकियों के माध्यम से पर्यावरण की सूक्ष्म समझ को दर्शाते हैं। भित्ति चित्रों की श्रृंखला में उनका महत्वपूर्ण कार्य हिंदी भवन की दीवार पर मेडुअल संत (मध्यकालीन संत) रहा।

मास्क मेकर, विनोद बिहारी मुखर्जी

विनोद बिहारी मुखर्जी का जन्म 7 फरवरी, 1904 ई. को पश्चिम बंगाल के कोलकाता शहर के बेहाला नामक स्थान पर हुआ था। विनोद बिहारी ने अपनी आरम्भिक शिक्षा संस्कृत कालेजिएट स्कूल से की, क्योंकि उनके परिवार में संस्कृत का विशेष सम्मान था। यहीं कारण था बचपन से ही घर में शिक्षा का माहौल रहा और सन् 1917 ई० में विनोद बिहारी शांति निकेतन के 'ब्रहम विद्यालय' में भर्ती हुए। विनोद बिहारी मुखर्जी आरंभ से ही अन्य छात्रों के मुकाबले अपने ढंग से ही सारा काम किया करते थे। और इस बात की परवाह नहीं करते की उनके कार्य की कोई सराहना कर रहा है या नहीं। शांतिनिकेतन के कला भवन में अपनी शिक्षा पूरी कर सन् 1925 ई. में विनोद बाबू कला भवन में ही अध्यापक हो गए। यहाँ कार्य करने की स्वतंत्रता थी और रवीन्द्रनाथ टैगोर की स्नेह छाया भी इसीलिए उनके कार्य जीवन के ये वर्ष उनकी स्मृति में सदैव आनंददायक बने रहे।

"विनोद बिहारी ने एक जगह कहा था– मैं अक्सर यह सोचता हूँ कि मेरा वास्तविक गुरु कौन है नंदलाल बोस या पुस्तकालय या शांति निकेतन का सादगी भरा परिवेश। बिना नंदलाल के मैं हुनरमंद नहीं हो सकता था और बिना पुस्तकालय के वह सब नहीं जान सकता था जो कि जान सका, और बिना प्रकृति के अध्ययन के उन बेलौस छवियों को कैसे आंक सकता था जो मैंने आंकी हैं। उनके द्वारा बनाये गये काष्ठ, फलक, दीवार, कैनवास, रेशमी कपड़े और बोर्ड पर बनाये गये उनके कार्यों की पर न केवल सराहना हुई बल्कि ये निजी संग्रहों के लिए भी खरीदे गए। जलरंग, तैलरंग, टेंपरा और बोर्ड पर बनाए गए चित्र अपनी मौलिकता और स्वयं एक दूसरे से अलग होने के कारण उनके दर्शकों और प्रशंसको के लिए विशेष आकर्षण उत्पन्न करते थे। उन्होंने कागज के फटे पुराने टुकड़ों से कोलाज की कई कृतियाँ बनाई। विनोद बिहारी मुखर्जी के इस प्रकार के कार्यों का असर उनकी आँखों पर पड़ता जा रहा था लेकिन उन्होंने अपने काम में किसी प्रकार की ढिलाई नहीं आने दी। प्रयोगों की विविधता के बावजूद उनकी कृतियों में पाश्चात्य शैलियों

का अनोखा समन्वय है की जिसकी छाप हमें विनोद बिहारी मुखर्जी की कोलाज कृतियों में देखने को मिलती है। कलाकार हेनरी मैटिस जो पश्चिमी रंगों के उपयोग, तरलता और मौलिक प्रारूप कौशल के लिए जाने जाते हैं, और विनोद बिहारी मुखर्जी जो भारतीय आधुनिक कला के अग्रदूतों में से एक थे।

हेनरी मैटिस और विनोद बिहारी की बाद के जीवन की व्यक्तिगत घटनाओं और उपक्रमों के बीच समानता थी। शारीरिक बीमारी के चलते दोनों कैनवास पर चित्रण करने की क्षमता खो बैठे और उसके बाद एक नई तकनीक सफेद कागज, और रंगीन ग्वाश रंगो से रंगकर उसमें जीवंत आकृतियाँ बनाकर विभिन्न आकारों में काटकर पेपर कट्स चित्रों की एक श्रृंख्ला विकसित की जो पारंपरिक पेटिंग से बहुत अलग हैं। विनोद बिहारी मुखर्जी की कुछ प्रमुख कोलाज कृतियों के नाम–टू फिगर्स, नारंगी टोपी वाला बच्चा, मास्क मेकर, पट्टा के साथ कुत्ता, वार्तालाप, फल वाली महिला आदि। दोनों एक बच्चे की तरह रंगीन कागज से अपनी मन पसंद डिजाइन काटते और उनके सहायक स्टूडियों की दीवारों पर उन डिजाइनों को उनके निर्देशानुसार सजाते। ये दोनों कलाकार हेनरी मैटिस और विनोद बिहारी मुखर्जी अपने जीवन के अंतिम वर्षों में शारीरिक रूप से अक्षम हो गये थे। जिसका प्रभाव उनके रचनात्मक अभियानों पर पड़ा। इनके चित्रों को देखने पर ऐसा प्रतीत होता है मानो उन्होंने अपने बचपन की सुंदर छवियों को उभारा हो या फिर वे बच्चा बन गये हो। पेंट ब्रश के साथ कुशल स्ट्रोक का कोई निशान नहीं, केवल वास्तविक रचनात्मक और कलात्मक संवेदनशीलता की छाप है। दोनों कलाकारों के कामों में कागज की कतरनों का उपयोग कर चित्रों के संयोजन में रूपों के सम्मोच्च और आयतन दोनों को प्रदर्शित करना है। एक निबंध में बिहारी ने लिखा। जिस व्यक्ति के पास देखने की शक्ति है उसे यह बताने की जरूरत नहीं है कि प्रकाश क्या है और जहाँ प्रकाश है वहाँ रंग है। अपने कोलाज में उन्होंने मूलतः आलंकारिक रचनाओं के माध्यम से रंग और अमूर्तता की खोज की।

ब्यूटी एण्ड बिस्ट, सतीश गुजराल

सतीश गुजराल – सृजनशील कलाकार कहे जाने वाले सतीश गुजराल का जन्म 25 दिसंबर 1925 को ब्रिटिश भारत के झेलम (अब पाकिस्तान) में हुआ था।सतीश गुजराल भारत के पूर्व प्रधानमंत्री इंद्र कुमार गुजराल के छोटे भाई थे। वह एक राजनीतिक परिवार में पैदा हुए थे। तेरह साल की उम्र में सतीश गुजराल ने मेयो स्कूल ऑफ आर्ट में प्रवेष लिया। मेयो स्कूल में पाँच साल तक सतीश गुजराल ने ग्राफिक्स कला का अध्ययन किया। बाद में मुम्बई के प्रसिद्ध जे० जे० स्कूल ऑफ आर्ट में उन्होंने पेन्टिंग के अध्ययन के लिए दाखिला लिया। यहाँ उनके चित्रों की पहली एकल प्रदर्शनी आयोजित हुई। उन्हें बहुमुखी प्रतिभा का धनी कहना काफी नहीं है, वह समग्र कलाकार हैं– टोटल आर्टिस्ट। पेंटिंग, मूर्तिशिल्प, सिरेमिक्स, म्यूरल, कोलाज, स्थापत्य सभी विधाओं में उन्होंने महत्वपूर्ण कार्य किया है। इन सभी माध्यमों में से पेपर कोलाज भी सतीश गुजराल का प्रिय माध्यम था। इन्होंने रंग बिरंगे कागजों को काटकर कोलाज बनाए हैं। उनके कुछ प्रमुख कोलाज चित्र– ब्यूटी एंड बीस्ट, दुर्गा, मदर एंड चाइल्ड, प्लेमेट्स, द हॉर्स, फैंटेसी, द वुमेन आदि। गुजराल के कोलाज पिकासों व ब्राक के कोलाज की तरह विविध सामाग्री से नहीं बल्कि केवल कागजों की कटिंगस जोड़कर ही बनाए

गए हैं। गुजराल की बहुमुखी प्रतिभा सदैव अभिव्यक्ति के नये आयाम तलाश करती रही है। यह कोलाज भी सिर्फ फैंटेसी न लगकर जीवन के रीयलिस्टिक अनुभव से निकले लगते हैं। फाबरी ने बहुत पहले ही गुजराल को जीनियस बता दिया था लेकिन गुजराल जब कोलाज सरीरवी विधाओं में सक्रिय हो गए तो फाबरी की आशाओं को धक्का लगा लेकिन अगर वे जीवित होते और गुजराल का उत्तर कोलाज योगदान देखकर उन्हें अपनी जजमेंट सही ही लगती।

के.जी.सुब्रमण्यन—सुब्रमण्यन बहुमुखी प्रतिभा के व्यक्ति थे। वे एक चित्रकार, भित्ति चित्रकार, मूर्तिकार, डिजाइनर, लेखक, कवि, कला विचारक, शिक्षाविद और दार्शनिक भी थे। कमलापति गणपति सुब्रह्मण्यन यानी के. जी. सुब्रमण्यन स्वतन्त्रता के पश्चात् उपजे कला परिदृश्य में जिन कलाकारों ने अंतरर्राष्ट्रीय आधुनिकता की ओर उन्मुख होते हुए भी कला और संस्कृति की संवेदनाओं को बनाए रखा। स्वयं के अनुसार वे एक कलाकार–कार्यकर्ता भी थे। उनके काम में मुख्य रूप से कैनवास, कागज और काँच पर उनकी पेंटिंग और उनके भित्तिचित्र शामिल हैं। उन्हें प्यार से मनी दा कहकर भी पुकारते थे। सुब्रमण्यन का जन्म 15 फरवरी 1924 ई० को कुथुपरंबा केरल के एक तमिल ब्राह्मण परिवार में हुआ था। 1944 से 1951 ई० तक कला भवन, शांति निकेतन से अपनी पढ़ाई पूरी कर बड़ौदा के एम. एस. विश्वविद्यालय के ललित कला संकाय में अध्यापक नियुक्त हो गए। अपनी रचनात्मकता को केवल कैनवास तक सीमित न रखते हुए उन्होंने म्यूरल, ईनैमल ऑन आयरन शीट, प्रिंटमेकिंग(लिथोग्राफी और सिल्क स्क्रीन प्रिंटिंग), टेराकोटा रिलीफ पेटिंग, एक्रेलिक शीट (कागज के स्थान पर), कोलाज(कागज की कतरनों) आदि विभिन्न माध्यमों में काम किया। देश के कई भवनों के बाहर म्यूरल बनाए जिसमें सबसे प्रसिद्ध 1962–63 के मध्य लखनऊ के चारबाग रेलवे स्टेशन के सामने स्थित रवीन्द्रालय रंगशाला की बाहरी दीवार पर बना म्यूरल किंग ऑफ डार्क चैम्बर्स" जो रवींद्रनाथ टैगोर के नाटक पर आधारित है इसे अंधेरे का राजा भी कहते है। यह म्यूरल 81 फुट लम्बा और 5 फुट ऊँचा है इस टेराकोटा म्यूरल में 13000 ग्लेज्ड टाइलों का प्रयोग हुआ है। जल रंग, तैल रंग, भित्तिचित्र, आदि से अलग हटकर मनी दा ने कागज की रंगीन कतरनों से कोलाज कृतियों का निर्माण किया। वे कहते है जब जब हम कागज से कृतियों के निर्माण की बात करते हैं तो हमारे जहन में शिल्पकार का ख्याल आता है लेकिन के. जी. सुब्रमण्यन ने कैनवास पर आकर्षित करने वाली कला बनाने के लिए कागज की कतरनों का प्रयोग कर कोलाज की सरल व मंत्रमुग्ध करने वाली और अभिनव कला में संलग्न है। के. जी. सुब्रमण्यन ने अपने कोलाज में भारतीय पौराणिक पात्रों को आधुनिक कोलाज अर्थात अलग–अलग रंग की हाथ से फाड़ी गई रंगीन पत्रिकाओं से चित्र को बनाते हैं और ऐक्रेलिक रंग के मिश्रण से चित्र को पूर्ण करते हैं। जो पहली बार में देखने पर एक साधारण बच्चों जैसा स्केच लगता है वह जल्द ही एक खूबसूरत कोलाज का रूप ले लेता है। उनके कुछ प्रमुख कोलाज चित्रों के विषय–सरस्वती, गणेश, राधा–कृश्ण, लेडी विद लैंप, बांसुरी बजाते कृष्ण, बुद्ध आदि। वे कहते हैं मैंने जितने भी माध्यमों का इस्तेमाल किया वे अपने आप में चुनौती पूर्ण थे

गणेश, के. जी. सुब्रमण्यन

लेकिन मैं अब भी इसका आनन्द लेता हूँ। यह एक प्रक्रिया है इसीलिए वे कला को अभ्यास कहते हैं–यह कभी खत्म नहीं होता। यह कभी पूरा नहीं होता है। यह सिर्फ एक प्रक्रिया है जिसे आप लगातार पूर्ण करने की कोशिश कर रहे है। सन् 2006 ई० में उन्हें भारत सरकार का पद्म भूषण और सन् 2012 में पद्म विभूषण पुरस्कार से सम्मानित किया। मनी दा ने अपने जीवन का अंतिम वक्त अपनी बेटी के साथ बड़ौदा में बिताया। 29 जून 2016 को 92 वर्ष की उम्र में इस महान कलाकार का निधन हो गया।

अमृतलाल वेगड़– 3 अक्टूबर 1928 को जबलपुर मध्यप्रदेश में जन्में अमृतलाल वेगड़ कलाकार होने के साथ–साथ एक लेखक भी थे। उन्होनें नर्मदा नदी से प्रभावित होकर उसके संरक्षण एवं सौन्दर्य का वर्णन करने के लिये करीब 4000 किमी 0 लम्बी नर्मदा नदी की पदयात्रा की तथा उसके अनुभवों एवं नदी के अद्भुत सौन्दर्य को चित्रों के माध्यम से अपनी पुस्तकों में प्रभावी तरीके से समेटा।

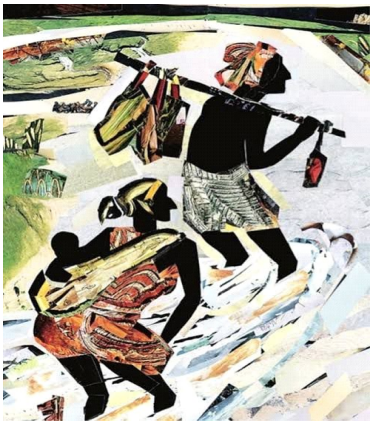

परकम्मा अमृतलाल वेगड़

अमृतलाल वेगड़ – मध्यप्रदेश निवासी अमृतलाल वेगड़ ने प्रथम बार जब कला धरा पर अपने पद चिन्हित किये तब से अंत तक वह नर्मदा नदी के सौन्दर्य को अपनी अनुभूतियों में संजोते रहे और जीवन भर उसके सौन्दर्य के अनुकरण से अपनी कला रचनाओं को सार्थक दिशा में प्रेरित करते रहे। बाल्यकाल से ही आपकी चित्रकला में रूचि थी जिससे आपकी कला शिक्षा शांति निकेतन के कलात्मक वातावरण व कला गुरू नन्दलाल बोस, बिनोद बिहारी मुखर्जी तथा रामकिंकर बैज के सानिध्य में प्राप्त हुई। 1952 में विश्व भारती शांति निकेतन से ललित कला की उपाधि प्राप्त कर 1953 में जबलपुर आये और कला प्राध्यापक के पद पर रहकर कला साधना करते रहे। उन्होंने वॉश तकनीक, जलरंग, टेम्परा विधि के साथ–साथ अनेक म्यूरल्स भी निर्मित किये। सन् 1977 में प्रथम नर्मदा यात्रा के साथ नर्मदा के रेखांकन बनाये और बाद में उन्हीं रेखांकनों को कोलाज में परिवर्तित किया तथा वही से इनकी कला शैली में कोलाज विधा का प्रादुर्भाव हुआ। पर्यावरण से जुड़े श्री अमृतलाल वेगड़ की अपनी पहचान उनकी कोलाज कृतियाँ एवं साहित्य से हैं। इनके कुछ प्रमुख कोलाज चित्र–रात्रि में घाट, स्नान, नर्मदांजलि, परकम्मवासी, भील कन्या, कपड़े सुखाती महिलायें, धान कूटते हुए आदि। नर्मदा की परिक्रमा से संबंधित उनके चित्रों की प्रदर्शनी मुबंई, कोलकाता, भोपाल, नई दिल्ली सहित देश के विभिन्न शहरों में प्रदर्शित की गई। सन् 1980 में सर्वप्रथम नर्मदा यात्रा के दौरान सृजित की गई कृतियों को प्रदर्शित किया और वहीं से इनकी एकल व सामूहिक प्रदर्शनियों का सिलसिला आरम्भ हो गया। उन्होनें जहाँगीर आर्ट गैलरी मुम्बई, भारत भवन भोपाल में एकल प्रदर्शनी का आयोजन कर नर्मदा के कलात्मक सौन्दर्य, संस्कृति और उसके पर्यावरणीय महत्व को जन मानस तक पहुँचाने का यथा उचित प्रयास किया। शिखर सम्मान, शरद जोशी सम्मान, सृजन सम्मान तथा महापंडित राहुल सांकृत्यायन जैसे महत्वपूर्ण सम्मानों से सुशोभित श्री अमृतलाल वेगड़ नर्मदा प्रेम से ओत प्रोत रहे हैं।

संदर्भ

1. भारद्वाज, विनोद. (2006) वृहद आधुनिक कला कोश वाणी प्रकाशनः दरियागंज, नई दिल्ली
2. प्रताप, डॉ० रीता. (2004) भारतीय चित्रकला एवं मूर्तिकला का इतिहास जयपुर

3. अग्रवाल, डॉ० जी०के०. (1991) आधुनिक भारतीय चित्रकला आगरा
4. शर्मा, अवनिाश बहादुर. भारतीय चित्रकला का इतिहास प्रकाश बुक डिपोः बरेली
5. गैरोला, वाचस्पति. (1972) भारतीय चित्रकला का संक्षिप्त इतिहास. इलाहाबाद
6. गोस्वामी, राकेश (2021) भारतीय आधुनिक एवं समकालीन कलाकार. गोस्वामी पब्लिकेशन प्रयागराज
7. https://magazine.artland.com/the-history-of-collage-art/
8. https://www.thecollector.com/art-collage-assemblage-modern-art/
9. .https://www-akarprakar-com.translate.goog/exhibitions/nandalal-bose?_x_tr_sl=en&_x_tr_tl=hi&_x_tr_ hl=hi&_x_tr_pto=imgs
10. https://www.itsnicethat.com/features/benode-behari-mukherjee-art-070322